>

Title: Need to provide employment to temporary employees of erstwhile State Bank of Indore after its merger in SBI on priority basis.

श्रीमती सुमित्रा महाजन (इन्दौर): स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में विलय को मेरा शुरू से ही विरोध रहा है। इस विलय से हम इन्दौर की पहचान जरूर खो रहे थे। स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर के विलय से बैंक के अस्थाई कर्मचारियों को जरूर नुकसान हुआ है। स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर के अस्थाई कर्मचारी जो कि विगत 10-15 वर्षों से अस्थाई (व्हावचर पेमेंट) रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर का विलय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में हो जाने से अस्थाई कर्मचारियों का भविष्य अधर में रह गया है। इन अस्थाई कर्मचारियों में 330 कर्मचारी 10 और 15 साल एवं कुछ कर्मचारी तो 25 वर्ष से अपनी सेवा प्रदान कर चुके हैं। स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर का विलय होने के पूर्व इन कर्मचारियों को कहा गया था कि इनकी सेवाएं यथावत जारी रहेगी। परन्तु इसके विपरीत बैंक द्वारा कई कर्मचारियों की सेवाएं बंद कर दी गई है। इतने साल बैंक में अपनी सेवाएं देने के बाद इन कर्मचारियों पर रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। यह एक प्रकार से उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ हुआ है तथा उनके परिवार का पालन पोषण भी बंद होने के कगार पर है। बैंक का विलय होने के पूर्व इन कर्मचारियों को कहा गया था था कि बैंक में नई भर्ती के समय उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी, परन्तु उस पर भी गंभीरता से कोई विचार नहीं किया गया है। मेरा सरकार से निवेदन है कि मानवीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त विषय में योग्य कार्रवाई कर वर्षों से बैंक के लिए कार्य कर रहे कर्मचारियों को नई भर्ती के समय प्राथमिकता देकर पुनः उनकी सेवाएं उन्हें प्रदान कर उन्हें स्थायी करें ताकि उनके परिवार का भविष्य सुरक्षित रह सके।